

०००००० ०००० ००:०००० ०० ००००.... ०००००० ०००००?

Written by कुमार सोवीर
Tuesday, 01 May 2018 01:53

: ०००० ००००० ०० ०००००० ०००००० ०० ०००००००० ००० ०००० ०००० ०००० ०००० ०० ०० ०० ००
००००००० ०००० ००० : ०००००००० ००००००० ००००००० ०००० ०००००० ०० ०० ०००० ००
००-०००००००० : ०००००० ०० ००००००००००० ०० ००००००००-००००० ०००० ०० ००००० ०० ०००००००
०००००० ००००० : ०००००००-००००० ०० :



००००० ०००००

०००० : आज अचानककरीब तीस बरस पुरानी बात याद आ गयी है। तब लोगों की बनयाइन-गंजी दो-कमहीनों में ही झर्रीदार यानी छलनी जैसी हो जाती थी। पहले छोटे-छोटे दाना साइज के छेद बनते थे, फिर मटर-नुमा और फिर बाक्यदा कसि छोटी तश् तरी तक जैसे फट्टी हो जाती थी वह गंजी-बनयाइन शुरुआत होती थी पैबंद-थेलगी लगाने से। लेकिन दो-तीन थेलगी के बाद ही अहसास हो जाता था कि ऐसे प्रयास नष् फल ही होंगे। वजह यह कि जल दी ही कि छोटे-नन् हैं छेद कि कसाथ मलि क कि कबड़े-बड़े छेदों में तब दील हो जाते थे। तब वह बनयाइन लुगदी की शक् ल ले लेती थी उसक इस् तेमाल तब घर की महलिा पौछा लगाने तक से परहेज करती थी। नतीजा यह कि सायक्लि या स् कूटर की साफ-सफाई में ही उसक इस् तेमाल हो जाता था।

क्यू या आप यह जानना चाहेंगे कि आखिर क्यू यों ऐसा होता था? इस सवाल क जवाब देते हैं गोमतीनगर स्थिति राजकीय होम् योपैथी कलेज के प्रोफेसर डॉक्यू टर कि सडी सहि अपनी क्यू लीनकिमें मरीजों से बातचीत से बातचीत के दौरान प्रो सहि बताते हैं कि तब लोग परशिरम करते थे, पसीना नक्लिता था और उसकी क्शारीय गुणों क असर बनयाइन पर पड़ता था, जिसे उनकी बनयाइन बड़े छेद-दार बन जाती थी।

लेकिन अब ऐसा होना बंद हो चुक है। इसलकि नहीं कि आज की बनयाइनें ज् यादा मोटी और टक्किऊ होती जा रही हैं। आज तो और भी महीन और बेहद हल् की गंजी-बनयाइनों क दौर आ चुक है। मगर मजाल है कि उन पर कोई छेद बन भी सके? बरसों-बरस तक उस पर कोई फूकही नहीं पड़ता। पुरानी बनयाइन होकर मटयिली और फेह हो जाती है, लेकिन फट्टी नहीं। वजह है मेहनत की गैरहाजरि। शारीरकिपरशिरम करना हमारे संस् कर से दूर छूट चुक है। अब तो कोई परशिरम करता ही नहीं। आरामदेह जीवन शैली है। सामाजकिप्राणी कहलाने वाला इंसान इस वक् त घर-घुस् सू बन चुक है। हर घर कूलर-सी कमि प् यूटर और इलेक् ट्रानकिसामान और लक्कसोफ-बसि तर है। धूल नहीं पड़नी चाहकि, इसलकि घर के पजिरा बना दिया। पैक् ड कि जो कुछ भी होना है, घर के भीतर ही करो। न मेहनत होगी, और न नक्लिगा पसीना। हचककर भोजन करो, और जाम छलक्कओ। यूरकि और ट्राइग्लसिराइड बड़ जा गा और दलि बात-बात पर हांफना शुरु कर देगा। दक्कि क्त हुई, तो डॉक्यू टर मोटी रक्म क खर्चा बता कर बोलेगा:- आराम करो।

